अधिनायक

आज बना शासक मैं केवल,
निज प्रति उत्तरदायी।
विपुल सैन्यबल संसाधनबल,
मेरे दृढ़ अनुयायी।
छल से बल से और अर्थ से,
भी करना हित साधन।
एक लक्ष्य है, सदा रहेगा
केवल बल आराधन।।

सकल आंतरिक रिपुगण को,
करके समूल उन्मूलित।
सकल विरोधी जिव्हाओं को,
करके क्रमशः कीलित ।
अब मैं परम स्वतंत्र, राष्ट्र के
संसाधन का स्वामी ।
लक्ष्य बचा अब अन्य राष्ट्र हों,
मेरे ही अनुगामी।।

कितनी संतति को तुम अधिकृत,
अधिकृत कितने धन को।
कितनी निद्रा के अधिकारी,
सूचित हो जन जन को ।
हम हैं जन के नव्य नियंता,
उन्नति लक्ष्य हमारा ।
शोषण मोषण रहित विश्व हो,
मात्र हमारा नारा ।।

त्याग करो तुम, और करो श्रम,
हम जगती पर छाएं ।
भव्य हमारे तंत्र मध्य कुछ,
और राष्ट्र आजाएं ।
अखिल विश्व के मार्ग हमारे,
देश ओर ही आएं ।
अब तक है श्रम किया शक्ति का,
अब गौरव दिखलाएं ।।

पर तुम रुकना नहीं परिश्रम,
करते रहना भाई ।
चन्द्र और मंगल पर हमको,
करनी और चढ़ाई ।
निर्जन ग्रह कर रहे प्रतीक्षा,
हमीं बसेंगे जाकर ।
अधिक स्वर्ण होगा आवश्यक,
धरणी का धन खा कर ।।

नव रोगों का जनन साधु है,
होंगे नव अन्वेषण ।
नव औषधि उत्पादन होगा,
दुर्बल होंगे द्वेषण ।
बढ़ती जाएगी जनता की,
भी प्रतिरोधक क्षमता ।
और चिकित्सकगण की होगी,
दूर त्वरित निर्धनता ।।

मानवपूंजी से हम पूरित,
हमको कैसा भय है ।
सक्षम इस पूंजी प्रयोग में,
और हमारा नय है ।
भय पाते हैं मात्र वहीं जन,
जिनको जीवन प्यारा ।
लहराएगा शीघ्र विश्व में,
ध्वज यह उच्च हमारा ।।

नहीं डरो तुम नवसर्जन से,
पूर्व ध्वंस होता है ।
सुख का सदा पूर्ववर्ती दुख,
और दंश होता है ।
जो परिवर्तन से भय खाते,
दुर्बल उनके मन हैं ।
सबल सदा ही शासन करते,
शासित निर्बल जन हैं ।।

अतः न चिंता करो जनमरण,
नहीं डिगाता हमको ।
पर्वत से हैं अडिग खड़े हैं,
शासित करने जग को ।
विपदा की इस गहन निशा से,
होगा उदित सवेरा ।
जग व्यापी होकर निकलेगा,
मम शासन का घेरा ।।

आओ करलें नमन उन्हें जो,
विपदा ने हैं निगले ।
नई राह पर अगले दिन ही,
राष्ट्र हमारा निकले ।
इसकी बस उन्नति अभीष्ट है,
इसका मान रखेंगे ।
शीघ्र हमारे शत्रु पराजय,
का फल विवश चखेंगे ।।

सबकुछ होगा सुलभ, एक बस
तुम स्वातंत्र्य न मांगो ।
स्वच्छंदता पतन है, विष है
मूढो कुछ तो जागो ।
भोग रहे स्वातंत्र्य वहां पर,
बहुजन वंचक रोटी ।
मुक्त विचार जहां पर चलते,
प्रगति हो रही छोटी ।।

मुक्त विचार काल्पनिक जग है,
सुदृढ़ धरणि है रोटी ।
अतिशय जनस्वैरता बनाती,
मनुज सभ्यता खोटी ।
अतः हमारा पंथ श्रेष्ठ है,
सब संशय तुम त्यागो ।
मृगमरीचिका है स्वतंत्रता,
मत तुम पीछे भागो ।।

जहां भिन्न मत आजाते हैं,
कठिन वहां पर निर्णय ।
नहीं मतैक्य वहां हो पाता,
आता है जब गुरु भय ।
हम हैं परम समर्थ आपदा,
कोई भी आजाए ।
उद्धारक बस हम हो सकते,
जब नरता घिर जाए ।।

मात्र एक आघात तंत्र जब,
सारे बिखराता है ।
ऐसा तंत्र जगत में जन को,
जाने क्यों भाता है ।
देखो हम हैं खड़े अडिग हो,
जब जग भय विह्वल है ।
निहित हमारे एक तंत्र में,
सब प्रश्नों के हल है ।।

इतर जातियों को समता का,
अब है पाठ पढ़ाना ।
श्रेष्ठ हमारा तंत्र इसे है,
अब सब ओर बढ़ाना ।
शोषण उन्मूलित करना है,
यही हमारा नारा ।
अपनी आयोजना पूर्तिहित,
कवच बने यह न्यारा ।।

युद्ध शांति का मूल, शक्ति
संचय विकास का पथ है ।
तब तक उन्नति जब तक विजयी,
बढ़ता जाता रथ है ।
वन उपवन पठार घाटी गिरि,
रहे सदा से अपने ।
सागर विजय हेतु देखे हैं,
हमने स्वर्णिम सपने ।।

सकल विश्व के मार्ग हमारे,
राष्ट्र ओर आयेंगे ।
उन्नति के सपने दिखलाकर,
बहुजन भरमाएंगे ।
मार्ग नहीं, ये हैं प्रभाव पथ,
विस्तृत अखिल जगत में ।
पहुंचेगा जिनसे जन अपना,
स्वर्णिम शुभ आगत में ।।

जिनके मनोरोग से उत्थित,
बहु विषाणु हैं जग में ।
ठेल रहे जो, असकृत धरणी
को विनाश के मग में ।
डाल रहे जो विषम बेड़ियां,
मानवता के पग में ।
स्वार्थ अहंता और क्रूरता,
जिनकी है रग रग में ।।

पहले हैं सर्वस्व छीनते,
छीन रहे अब वाणी ।
रहे मात्र उत्पादन साधन,
नर निरीह सा प्राणी ।
अब मानव मस्तिष्क लक्ष्य है,
कुंठित हो नव चिंतन ।
शठ जन आयोजित यह कैसा,
नर का क्रमिक निक्रंतन ।।

नायक जिनको प्रजा समझती,
बन जाते अधिनायक ।
यदि न सचेत बुद्धिजीवी हों,
परिषद हो अनुगायक ।
समता प्रगति मात्र आच्छादन,
केवल बल आराधक ।
मात्र महत्वाकांक्षा पोषक,
विश्वशांति के बाधक ।।

स्वीकृत जिनको नहीं कभी भी,
इतर मनुज की गरिमा,
सभी अन्य देशों में जिनको,
सदा भासती लघिमा ।
आत्मीय जन रहित अरक्षित,
अंतर्मन से पीड़ित ।
गुप्त रूप से स्वजनोच्छेदक,
शंकाग्रस्त अपरिमित ।।

अतिविस्तार विमुग्ध संकुचित,
हृदय कृष्णतर जिनका ।
निजबल गर्वित परधन लोभी,
प्राणी जिनको तिनका ।
दर्शितश्रेष्ठमतित्व स्वयं जो,
हर विधान से ऊपर ।
ख्यापित निजदेवत्व विचरते,
अपर ईशवत भूपर ।।

जाति राष्ट्र उन्नयन व्याज जो,
युद्धोन्माद प्रसारक ।
निज महत्व एषणा पूर्तिहित,
जन जन धन अपहारक ।
जनहित व्याज आत्महित पोषक,
पर विकास के बाधक ।
हर्षित बहुत व्यक्ति पूजा से,
इन्द्रिय सुख के साधक ।।

पर उन्नति असहिष्णु जिष्णुता,
के अनवरत प्रचारक ।
कल्पित आरोपों को मढ़ कर,
प्रतिद्वंद्वी उत्सारक ।
आत्मशांति विरहित जगती के,
शम के पटु अपहारक ।
असंतुष्ट जो सदा इकट्ठे,
करते आयुध मारक ।।

संस्कृति गान छद्म से जो नर,
मृत्युगीत के गायक ।
मानवता के और धर्म के,
हृदय गढ़े से सायक ।
परम विनाश हेतु नरता के,
कूट दुरभि संधायक ।
इन लक्षण से युक्त, न नर हैं,
नायक, हैं अधिनायक ।।

दिनांक : 31/05/2020

पं शिव कुमार मिश्र